Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 22, Issue No. 4, July-2025, ISSN 2230-7540

DOI: https://doi.org/10.29070/j3q9n539

Check for updates

सतना जिले के अनुसूचित जनजाति के छात्रों में शैक्षिक और व्यावसायिक गतिशीलता

सारिका गर्ग [1] * , डॉ. आशीष यादव [2]

1. शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश, भारत
sarikadwvdi28@gmail.com ,
2. एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश: जाति को स्तरीकरण की एक बंद व्यवस्था माना जाता है। हालाँकि, वास्तव में, कोई भी व्यवस्था पूरी तरह से बंद नहीं हो सकती। वास्तव में, जाति व्यवस्था के भीतर सामाजिक गतिशीलता हमेशा से मौजूद रही है। समाजशास्त्रियों का मानना है कि भारतीय जाति व्यवस्था की बंद प्रकृति के बावजूद, जाति पदानुक्रम और उसके मानदंडों में बदलाव हुए हैं, जो समय-समय पर स्पष्ट हो गए हैं। वर्तमान अध्याय का मुख्य उद्देश्य सतना जिले के अनुसूचित जनजाति के उत्तरदाताओं के शैक्षिक तथा व्यावसायिक गतिशीलता पर अध्ययन करना है। अध्ययन से पता चलता है कि सामाजिक गतिशीलता एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति और सामूहिक समुदाय एक स्थिति से दूसरी स्थिति में जाते हैं। सामाजिक गतिशीलता पूरी तरह से समाज के खुलेपन और बंद होने की डिग्री पर निर्भर करती है। औद्योगिक समाज में, खुलेपन की डिग्री पूर्व-औद्योगिक समाज की तुलना में अधिक है। यहाँ, औद्योगिक समाज में, एक आयाम से दूसरे आयाम तक की गतिशीलता पूर्व-औद्योगिक समाज की तुलना में काफी अधिक है। पूर्व-औद्योगिक समाज में, स्थिति हमेशा निर्धारित की जाती थी, जबकि अब, यह उपलब्धियों, प्रतिभा, क्षमता और कड़ी मेहनत पर आधारित है।

मुख्य शब्द: शिक्षा, समाज, पंचवर्षीय योजना, आदिवासी, समाजशास्त्री, अनुसूचित जाति, अनुसुचित जनजति

---------- X ----------

परिचय

शिक्षा का अर्थ कई प्रख्यात शिक्षाविदों ने दिया है, उनमें सुकरात, महान दार्शनिक, प्लेटो और जॉन डुलोइस शिक्षा का अर्थ देने में प्रमुख हैं, हम विभिन्न युगों में शिक्षा के अर्थ में परिवर्तन पा सकते हैं। वैदिक संतों के लिए शिक्षा बालक के भावी जीवन का निर्माण करने का साधन है, शिक्षा केवल व्यक्ति को जीवन के सभी बंधनों से मुक्त करने का साधन नहीं है, यह जिम्मेदारी की निरंतरता, सामाजिक सुधार और सही प्रकार के जीवन की सुरक्षा है।

यह 'ज्ञान प्राप्ति' है, जबकि व्यक्ति को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाते हुए, मजबूत सभ्यता के निर्माण में मदद करता है। अंग्रेजी शब्द 'एजुकेशन' लैटिन शब्द 'एजुकेयर' से लिया गया है जिसका अर्थ है व्यक्ति में छिपे सर्वश्रेष्ठ को बाहर लाना।

प्रख्यात शिक्षाविदों ने शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया है: महात्मा गांधीजी ने शिक्षा को "मनुष्य की सर्वोत्तम क्षमता के प्रसार का साधन" के रूप में परिभाषित किया है। कौटिल्य ने शिक्षा को 'आत्मविश्वास' देशभक्ति को आत्मसात करने और इस तरह राष्ट्रीय विकास में मदद करने का साधन" के रूप में परिभाषित किया है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार 'यह वह शिक्षा है जो मनुष्य में छिपे हुए दैवीय गुणों को सामने लाती है"।

डॉ. राधाकृष्णन ने कहा कि "धर्मांतरण करते समय यह शिक्षा है" बच्चों को मानव सभ्य, मिलनसार प्राणी बनाना और उन्हें सम्मानजनक और सम्मानजनक जीवन जीने के लिए बनाना", रवींद्रनाथ टैगोर ने शिक्षा को "शिक्षा प्रशिक्षण प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है जो मनुष्य को मूल सत्य का पता लगाने के लिए प्रेरित करती है" और सुकरात के अनुसार, "शिक्षा ही साधन है।

शिक्षा की प्रमुखता

शिक्षा प्रदान करना आधुनिक समाजों के बुनियादी कार्यों में से एक है, सांस्कृतिक विरासत को जारी रखने के लिए शिक्षा को और

अधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता बना देता है। शिक्षा मानव की सांस है और हर समाज का महत्वपूर्ण चरित्र है, सभ्यता की उपलब्धियां और क्षमताएं एक शिक्षा पर निर्भर करती हैं, आधुनिक दिनों में शिक्षा राष्ट्र के सभी आयामी विकास का प्रमुख और शक्तिशाली निर्धारक है, इसलिए शैक्षिक प्रगति राष्ट्रीय विकास की पूरक है। चूंकि शिक्षा व्यक्तिगत विकास के लिए बहुत आवश्यक है, यह सामाजिक सुरक्षा के लिए बहुत आवश्यक है, यह सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक नियंत्रण के साधन के रूप में कार्य करती है। अतः इन आधुनिक समाज में शिक्षण संस्थाओं की प्रमुखता बढ़ती जा रही है, शिक्षा प्रदान करने के समान एवं मुक्त अवसर सामाजिक गतिशीलता में सहायक होते हैं, इस कारण विश्व के अधिकांश देश शैक्षिक उपलब्धि के लिए बहुत अधिक धन का निवेश करते हैं, भारत के लिए शिक्षा है। पैसा खर्च करना ये सभी पंचवर्षीय योजनाएं हैं। पंचवर्षीय योजना में खर्च किए गए धन को इस प्रकार पहचाना जा सकता है।

तालिका 1: पंचवर्षीय योजनाओं में शैक्षिक व्यय

पंचवर्षीय योजना	करोड़ रुपये में खर्च	प्रतिशत
पहली पंचवर्षीय योजना	133	6.8
दूसरी पंचवर्षीय योजना	208	4.5
तीसरी पंचवर्षीय योजना	418	4.9
चतुर्थ पंचवर्षीय योजना	823	5.2
पांचवी पंचवर्षीय योजना	1285	3.3
छठी पंचवर्षीय योजना	2977	2.6
सातवीं पंचवर्षीय योजना	7,686	3.5
आठवीं पंचवर्षीय योजना	19,600	4.5
नौवीं पंचवर्षीय योजना	51,365	

स्रोत "व्यवस्ते अर्थिका एच.आर.के. "भरथदा :स्वप्ना बुक सेंटर, बैंगलोर, 2001।

व्यक्तिगत और सामाजिक कार्यों को आसानी से पूरा करने के लिए शिक्षा आधुनिक दिनों में बहुत उपयोगी साधन है, शिक्षा प्राप्त

करके महिलाओं को सशक्त बनाया जा रहा है, पिछड़े वर्गों के विकास और उनकी सामाजिक स्थिति को समृद्ध करने के लिए, शिक्षा आधुनिक शिक्षा को अनुसूचित जनजाति बनाने में मदद कर रही है। विकास के क्रम में होना। शिक्षा को दो रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है, एक सामान्य शिक्षा है और दूसरी व्यावसायिक शिक्षा है। सामान्य शिक्षा सैद्धांतिक शिक्षा है जिसमें शिक्षित बेरोजगारी की समस्या के लिए व्यावहारिक प्रयोज्यता का अभाव है और शिक्षा का दूसरा रूप व्यावसायिक शिक्षा है, यह नौकरी उन्मुख शिक्षा है जिसमें कुछ कौशल सिखाए जाते हैं और कुछ नौकरियों में परिपूर्ण होते हैं, इस प्रकार की शिक्षा शिक्षित लोग स्वरोजगार करेंगे और समाज पर बोझ नहीं होंगे। इस प्रकार व्यावसायिक शिक्षा कुशल और स्व-पूर्ण शिक्षा है जो व्यक्ति को व्यावहारिक और नियोजित बनाती है। शिक्षित बेरोजगारी की समस्या को हल करने के लिए व्यावसायिक या नौकरी-उन्मुख शिक्षा समय की आवश्यकता है, इस प्रकार, नौकरी उन्मुख शिक्षा के महत्व को जानना। महात्मा गांधीजी ने इसे "नई तालीम" नामक अपनी बुनियादी शिक्षा प्रणाली में पेश किया, जहां उन्होंने गतिविधियों को करने में सिर, हृदय और हाथ के विकास के लिए ज्ञान को शामिल किया। हमारे समाज की निम्नलिखित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यावसायिक शिक्षा की शुरुआत की जानी चाहिए। किसी भी राष्ट्र को औद्योगिक रूप से विकसित करने के लिए कुशल और सक्षम श्रम की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा राष्ट्र औद्योगिक रूप से विकसित हो रहा है, इसके लिए कुशल विशेषज्ञ और कुशल मानव शक्ति की आवश्यकता होती है और यह केवल व्यावसायिक शिक्षा द्वारा प्रदान की जा सकती है।

भारत में अंग्रेजों के आगमन के बाद, स्वतंत्र भारत और औद्योगिक क्रांति के बाद विभिन्न क्षेत्रों में कई क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं, जिसके परिणामस्वरूप राज्य के साथ-साथ केंद्र सरकार ने कई औपचारिक शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना करते हुए विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्रदान करना शुरू कर दिया है। इसलिए शिक्षित बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम शुरू करने की आवश्यकता उभरी। इस बात को ध्यान में रखते हुए मुदलियार, कोठारी और ईश्वर भाई पटेल के शैक्षिक आयोग ने शिक्षा में व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू करने पर जोर दिया। इस प्रकार की शिक्षा को "जीवन शिक्षा" कहा जाता है। मानव संसाधन विकास में कार्यबल का उपयोग करने का श्रेय तत्कालीन अंग्रेजों को जाता है क्योंकि उन्होंने ज्ञान श्रमिकों और भौतिक श्रमिकों को भी महत्व दिया। अंग्रेजों ने सभी के लिए एक शैक्षिक योजना तैयार की थी जिसमें कई छोटे पैमाने के उद्योग थे, उन्होंने कृषि को एक विशेष ढांचा दिया। उन्होंने भारत में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों और करियर शिक्षा को प्रोत्साहन दिया।

एक राष्ट्र की प्रगति मानव-शक्ति और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करती है। चूंकि भारत के पास विशाल मानव शक्ति और प्राकृतिक संसाधन हैं, इसलिए येवैज्ञानिक और तकनीकी रूप से शिक्षित बनाया जा सकता है और मानव शक्ति के वैज्ञानिक और तकनीकी सशक्तिकरण के लिए राष्ट्र को औद्योगिक और आर्थिक रूप से विकसित बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। व्यावसायिक शिक्षा शुरू की जानी चाहिए। इस प्रकार उपरोक्त सभी आवश्यकताओं के साथ विशाल मानव शक्ति को मानव पूंजी में राष्ट्र की संपत्ति के रूप में परिवर्तित करके, हमें व्यावसायिक शिक्षा को अधिक प्राथमिकता देनी चाहिए।

व्यावसायिक शिक्षा किसी नौकरी या पेशे में कुछ दक्षता और कौशल हासिल करने की शिक्षा है जिससे एक व्यक्ति विशेष नौकरी को कुशलतापूर्वक और पूरी तरह से बनाए रखता है। यह कैरियर की शिक्षा है जो एक व्यक्ति को कुछ काम करने में कुशल, कुशल और परिपूर्ण बनाती है, यह उसे अपने स्वाद और दृष्टिकोण के अनुसार किसी नौकरी में शामिल होने में मदद करती है और इस तरह कुछ आय प्राप्त करने और उचित जीवन जीने में मदद करती है। यह नौकरी-उन्मुख शिक्षा है जो एक व्यक्ति सीखता है और व्यापार की तकनीकों को प्राप्त करता है और खुद को स्वतंत्र जीवन में मदद करता है। यह अक्षरों के ज्ञान से कहीं अधिक है जो व्यक्ति की गुप्त क्षमताओं को सामने लाता है और उसे समाज के लिए उपयोगी बनाता है। यह उस प्रकार की शिक्षा है जो पेशे में सामाजिक मूल्यों को सम्मिलित करने के लिए तैयार करती है। यह देश की आर्थिक स्थिति में बदलाव के कारण है और सामान्य शिक्षा की विफलता, यह व्यावहारिक शिक्षा इन दिनों बहुत महत्व प्राप्त कर रही है।

वह शिक्षा जो व्यक्ति को वाणिज्य, उद्योग, कृषि, व्यवसाय, गृह रखरखाव और अन्य तकनीकी ज्ञान में उपयोगी जानकारी और प्रशिक्षण देती है और इस तरह उन्हें नौकरी करने के लिए तैयार करती है, व्यावसायिक शिक्षा कहलाती है, जे.एच.एस.मिथ के अनुसार, "शिक्षा वह है जो लोगों को आवश्यक सेवाओं में शामिल करती है"। यह अपने और अपने आश्रितों के जीवन भर का भरण-पोषण प्रदान करती है, यह नौकरी की शिक्षा है जिसके माध्यम से व्यक्ति को समाज में उचित सामाजिक संबंध बनाने में मदद मिलती है। यह वह शिक्षा है जो व्यक्ति को समाज में सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति बनाती है। शिक्षा निम्नलिखित बिंदुओं के लिए प्रमुख है:

1. शिक्षा एक राष्ट्र के आर्थिक विकास को सक्षम बनाती है, जबकि कुशल शिक्षा उद्योगों, वाणिज्यिक गतिविधियों, व्यापार और सेवा उद्योगों की स्थापना का कारण बनती है और ये अत्यधिक सुरक्षित और अधिक लाभकारी नौकरियां प्रदान करती हैं, यह प्राकृतिक के उचित उपयोग के लिए औद्योगिक और तकनीकी प्रगति है। संसाधन और अधिक उत्पादन, ये सभी सुविधाएं राष्ट्र के आर्थिक विकास को सक्षम बनाती हैं। राष्ट्रीय धन के बढ़ने से लोगों के जीवन स्तर में सुधार होता है।

2. अनुसूचित जनजाति के छात्रों को लाभदायक नौकरियों में शामिल होने और इस तरह आत्मनिर्भर और कुशल बनने के लिए शिक्षा आवश्यक है। वास्तव में, बहु-कौशल के साथ बहुउद्देश्यीय शिक्षा में शामिल छात्र उन्हें कुशल और समृद्ध बनाते हैं।

3. शिक्षित बेरोजगारी को दूर करने के लिए यह कुशल और रोजगारोन्मुखी शिक्षा आवश्यक है, शिक्षा युवाओं को रोजगार प्रदान करती है।

4. शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। शिक्षा वर्तमान जीवन स्थितियों, सीखने के सिद्धांत और व्यावहारिक पद्धति को समझती है। वे छात्रों के स्वाद और योग्यता के अनुसार अलग-अलग व्यावसायिक पाठ्यक्रम हैं। व्यावसायिक शिक्षा मन और शरीर के विकास में मदद करती है, व्यावसायिक शिक्षा में मानव संसाधन और प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग किया जाता है।

5. व्यावसायिक शिक्षा रचनात्मक और प्रजनन योग्य है, एक व्यक्ति को जीवन-आत्मा, जीवन की कमी और पेशेवर शिक्षा और पेशेवर शिक्षा द्वारा अद्वितीय कौशल प्राप्त होता है, जो उन लोगों को प्रेरित करता है जो कम मानव पूंजी का निवेश करते हुए अधिक उत्पादन करते हैं।

साहित्य की समीक्षा

सुजीत कुमार चौधरी (2016) ने भारत के झारखंड राज्य में दो विशिष्ट आदिवासी समूहों, यानी उरांव और संथाल का अनुभवजन्य अध्ययन किया। भारत सरकार ने अनुसूचित जनजातियों को शिक्षा के सभी स्तरों पर समानता के शैक्षिक अवसर प्रदान करने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। प्रारंभिक शिक्षा के मामले में, सरकार विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों की मदद से विशेष रूप से शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई) और सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) के माध्यम से उनकी शैक्षिक स्थिति में सुधार करने की कोशिश कर रही है। इसके बावजूद आदिवासी अभी भी किसी न किसी रूप में शैक्षिक अभाव का सामना कर रहे हैं। हालाँकि, यह शैक्षिक अभाव स्थिर नहीं है; यह जगह-जगह बदलता रहता है और यह एक आदिवासी विशिष्ट है। उदाहरण के लिए, रांची जिले की उरांव जनजाति अधिक शिक्षित है और देवघर जिले की संथाल जनजाति की तुलना में उच्च सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक स्थिति रखती है। दरअसल दोनों जिले एक ही राज्य यानी झारखंड राज्य के हैं।

पुरुषोत्तम, ढींगरा वी. (2016) ने भारतीय आदिवासी जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने की कोशिश करता है, जैसे भारत में जनजातियों का वितरण, जनजातियों का इतिहास, आदि। पेपर में सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और जैसे प्रमुख मुद्दों पर प्रकाश डाला गया। बहुत अधिक। भारत में जनजातीय समुदाय सबसे कमजोर समुदाय रहा है। जीवन के हर कदम पर उनके मौलिक मानवाधिकारों का उल्लंघन होता है। आदिवासी पिछड़े और गरीब हैं, प्राकृतिक रूप से अलग-थलग रहने वाले क्षेत्रीय निवासियों में रहते हैं। दूरदराज के इलाकों में आदिवासी अभी भी सड़क और संचार, स्वास्थ्य और शिक्षा और सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता की सामान्य बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं, जो उन्हें सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली तकनीकी और वित्तीय सहायता को अवशोषित करने की अनुमति नहीं देते हैं। अनुसूचित जनजाति आदिम लक्षणों, विशिष्ट संस्कृति, भौगोलिक अलगाव, बड़े पैमाने पर समुदाय के साथ संपर्क की शर्म और पिछड़ेपन के संकेत हैं। देश की जनजातीय आबादी 10.43 करोड़ है, जो कुल आबादी का 8.61% है। मध्य प्रदेश में एसटी की सबसे बड़ी संख्या है, जो भारत की एसटी आबादी के कुल प्रतिशत में 14.69% का योगदान करती है।

संजय कू और घडाई (2016) ने शिक्षित और सशक्त बनाने के लिए नीतिगत पहलों का विश्लेषण किया और इस उपेक्षित वर्ग की अंधकारमय तस्वीर सामने लाते हैं। 12वीं योजना ने भारत की शिक्षा नीति के तिपाई के रूप में इक्विटी, एक्सेस और उत्कृष्टता पर प्रकाश डाला। आरटीई अधिनियम 2009 ने उच्च स्तर का सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) सुनिश्चित किया है। हालांकि, शिक्षा

की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर) हमारी स्कूली शिक्षा प्रणाली के परिणाम आयामों की निराशाजनक तस्वीर पेश करती है। इसलिए सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) सार्वभौमिक पहुंच के एक महत्वपूर्ण संयोजन के रूप में गुणवत्ता के महत्व पर प्रकाश डालता है, क्योंकि कौशल आधारित शिक्षा उचित रोजगार अवसर सुनिश्चित करेगी। शिक्षा के लिए एक प्रमुख प्रवर्तक है सभी के लिए सशक्तिकरण; और विशेष रूप से एसटी जैसे समाज के अत्यंत कमजोर वर्गों के लिए। आदिवासी छात्र बहुआयामी रूप से विकलांग हैं, शिक्षा एक महत्वपूर्ण दोष रेखा के रूप में है। यह सरकारी और एससी/एसटी स्कूलों में अपने समकक्षों की तुलना में लिंग समानता, व्यावसायिक प्रशिक्षण, स्वास्थ्य उपशमन, बालिकाओं की गरिमा और शैक्षिक परिणामों को बढ़ावा देने के मामले में कलिंग सामाजिक विज्ञान संस्थान (केआईएसएस) के अनुभव के विपरीत है। यह पेपर KISS के अनूठे फंडिंग मॉडल और प्रतिकृति के लिए इसकी क्षमता पर भी प्रकाश डालता है। समावेशी विकास और गुणवत्ता कैसे काम कर सकती है। पेपर "कौशल भारत" पहल के माध्यम से सरकार के हाथ पकड़ने और KISS के रूप में अनूठी पहल के वित्तपोषण के लिए दृढ़ता से तर्क देता है।

विशाल डी. पजानकर (2016) ने मध्य भारत में मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के दो ब्लॉकों में स्कूल में उपस्थिति बढ़ाने में सुगमता द्वारा निभाई गई भूमिका की समीक्षा की। किसी भी विकासशील राष्ट्र में शिक्षा प्रणाली के विकास और प्रसार के लिए स्कूलों की पहुंच चिंता का विषय रही है। भारत भी इसका अपवाद नहीं है। जब से भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की है, तब से पूरे देश में शैक्षिक सुविधाओं के प्रसार में समावेशिता प्रदान करने के प्रयास किए गए हैं। हालांकि, जगह की भौगोलिक विशेषताओं और बुनियादी ढांचागत सुविधाओं के विकास की कमी ने अक्सर शिक्षार्थी को सीखने के केंद्र (स्कूल) में आने से रोक दिया है। इसी तरह की स्थलाकृति और अन्य कारक भारत के अन्य हिस्सों में प्रमुख हैं, इसलिए केस स्टडी के सुझावों को अन्य क्षेत्रों में भी दोहराया जा सकता है।

परीक्षित चक्रवर्ती (2019) का उद्देश्य पश्चिम मेदिनीपुर जिले के विशेष संदर्भों के साथ पश्चिम बंगाल में अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक परिदृश्य को उजागर करना है। शिक्षा मानव संसाधन विकास के सबसे आवश्यक तत्वों में से एक है। स्वतंत्रता के बाद के समय में भारत को शिक्षा के आवश्यक स्तर को हासिल करना बाकी है। अनुसूचित जनजाति परंपरागत रूप से देश के अधिक दूरस्थ क्षेत्रों में और जंगलों और प्राकृतिक संसाधनों के करीब रहती थी। वे एक अलग भौगोलिक क्षेत्र में रह रहे हैं। उनकी अपनी संस्कृति, रीति-रिवाज, धार्मिक मान्यता आदि है जो उन्हें अन्य समुदायों से अलग बनाती है। प्रत्येक आदिवासी समुदाय की अपनी पारंपरिक सांस्कृतिक विशिष्टता होती है और आमतौर पर वे बहुत गरीब होते हैं। उनके आर्थिक, हाशिए पर पड़े, वंचित समुदायों, सामाजिक और राजनीतिक पिछड़ेपन के कारण शैक्षिक पिछड़ापन उनकी आजीविका के मूल में है। 2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार, पश्चिम बंगाल की कुल जनसंख्या 9,13,47,736 है जिसमें 52,96,953 (कुल जनसंख्या का 5.79%) आदिवासी लोग हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, जनजातियों के बीच साक्षरता दर (58.96%) देश की समग्र साक्षरता (74.04%) से काफी नीचे पाई गई है, जबकि, पश्चिम बंगाल में, आदिवासी समुदायों में साक्षरता दर 57.97 प्रतिशत दूर पाई गई है। राज्य की समग्र साक्षरता से नीचे 77.08% है। अंत में, वर्तमान अध्ययन ने पश्चिम बंगाल की एक जनजाति और साथ ही पश्चिम मेदिनीपुर जिले में साक्षरता की स्थिति पर एक चित्र दिया, जहां अध्ययन ने अध्ययन जिले का एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण बताया जहां जिला आदिवासी साक्षरता दर पश्चिम बंगाल आदिवासी साक्षरता दर से कहीं बेहतर है। साथ ही भारतीय जनजातीय साक्षरता दर (2011 की जनगणना के अनुसार)। हालांकि, अध्ययन ने यह भी बताया कि आदिवासी साक्षरता दर भारत के साथ-साथ पश्चिम बंगाल की समग्र साक्षरता दर से काफी नीचे है।

रुपला नाइक (2019) ने आदिवासी महिला समुदाय के लिए आंध्र प्रदेश में आवश्यक शिक्षा के लिए पर्याप्त रूप से प्रतिक्रिया देने के लिए शैक्षिक नीति के लिए बहस करते हुए निष्कर्ष निकाला। शिक्षा ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास के साथ महिलाओं को सशक्त बनाने के आवश्यक साधनों में से एक है, जो विस्तार प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने के लिए आवश्यक है। यह उच्च उत्पादकता, दक्षता और व्यक्ति के साथहाशिए शिक्षा है होता शुरु लिए के विकास सामाजिक-आर्थिक बेहतर के समाज साथ-में विकास के राष्ट्र को शिक्षा की महिलाओं है साधन एक का सशक्तिकरण बीच के महिलाओं आदिवासी वाली रहने पर सबसे शक्तिशाली हथियारों में से एक के रूप में माना जाता है। सशक्तिकरण आर्थिक का महिलाओं आदिवासी से माध्यम के शिक्षा . की महिलाओं आदिवासी है। सपना का दूर विकास शैक्षिक लिए के महिलाओं आदिवासी देगा। योगदान बहुत में विकास राष्ट्रीय समक पुरुष उनके स्थिति शैक्षिकक्षों की तुलना में बहुत कम है। वर्तमान परिदृश्य में आदिवासी महिलाओं में साक्षरता का

विकास एक चुनौतीपूर्ण मुद्दा है। आदिवासी महिलाओं की शिक्षा के बिना देश का सार्थक, समावेशी विकास संभव नहीं है। आदिवासी महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण को आय और उनकी प्रति व्यक्ति आय, शिक्षा तक पहुंच, व्यावसायिक अवसरों की पहुंच और उपलब्धता और आर्थिक निर्णय लेने में भागीदारी और राजनीतिक अवसरों तक उनकी पहुंच के लिए उनके पास वित्तीय संसाधनों से अधिक शक्ति के माध्यम से मापा जा सकता है।

रीमिंगम मारचांग (2020) ने पूर्वोत्तर क्षेत्र (एनईआर) के अनुसूचित जनजातियों (एसटी) की शिक्षा, रोजगार और अर्थव्यवस्था के बीच अंतर्संबंधों का विश्लेषण और चर्चा किया। सामाजिक-आर्थिक अविकसितता के बावजूद इस क्षेत्र के शैक्षिक स्तर में तेजी से सुधार हुआ है। शिक्षा में सुधार रोजगार की संरचना को बदल देता है जो बाद में अनुसूचित जनजातियों की आर्थिक अभिविन्यास और संरचना को बदल देता है। यह पेपर गैर-कृषि रोजगार के साथ-साथ एसटी की आर्थिक स्थिति के लिए शिक्षा के लाभ को स्थापित करने का प्रयास करता है, जो ज्यादातर क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों, विशेष रूप से मणिपुर राज्य में रहते हैं। अध्ययन द्वितीयक और प्राथमिक दोनों प्रकार के आँकड़ों पर आधारित है। इसमें क्षेत्र के एसटी पर जोर देते हुए शिक्षा, रोजगार और अर्थव्यवस्था के बीच संबंध से संबंधित माध्यमिक साहित्य की समीक्षा शामिल है। इसके अलावा, साहित्य को मजबूत करने के लिए माध्यमिक डेटा के आधार पर शिक्षा, रोजगार और अर्थव्यवस्था के पैटर्न, स्तर और प्रवृत्तियों का विश्लेषण और वर्णनात्मक रूप से चर्चा की जाती है। सामाजिक या आर्थिक अभाव या उन्नति को समझने के लिए एसटी और सभी सामाजिक समूहों के बीच तुलना की जाती है। एसटी की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाली शिक्षा और रोजगार की बदलती स्थिति को मान्य करने के लिए प्राथमिक क्षेत्र सर्वेक्षण डेटा का विश्लेषण और चर्चा की जाती है। डेटा विश्लेषण के परिणाम बताते हैं कि शैक्षिक स्तर में काफी सुधार हुआ है; हालांकि, सभी सामाजिक समूहों का अनुसरण करने वाले अनुसूचित जनजातियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति का स्तर अभी भी कम है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के साथ, बाजार अर्थव्यवस्था की ओर उन्मुख रोजगार के रास्ते तेजी से विविध हो गए हैं। हालांकि, दुर्भाग्य से, काफी हद तक निर्वाह अर्थव्यवस्था कम आय और जीवन स्तर प्रदान करती है।

जीसु केतन पटनायक (2020) ने पाया कि शैक्षिक प्रक्रिया काफी हद तक सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं और भाषाई कौशल की उपेक्षा करती है जो आदिवासी छात्र कक्षा में लाते हैं। ओडिशा में कोरापुट जिले के 142 आश्रम स्कूलों में आदिवासी छात्रों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि पर केंद्रित, यह लेख भारत में आदिवासी बच्चों के लिए शैक्षिक वातावरण और शिक्षा की गुणवत्ता की पड़ताल करता है। चूंकि उनका शैक्षिक प्रदर्शन काफी हद तक असंतोषजनक है, इसलिए निम्न शैक्षिक उपलब्धियों के पीछे प्राथमिक कारणों का पता लगाया जाता है। विशेष रूप से, आदिवासी बच्चों को स्कूली शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों के दौरान गंभीर भाषा कठिनाइयों का अनुभव होता है। बच्चों की मातृभाषा के बजाय सभी आश्रम स्कूलों में प्रमुख राज्य भाषा, उड़िया को शिक्षा के एकमात्र / प्रमुख माध्यम के रूप में उपयोग करने की प्रथा, युवा शिक्षार्थियों को उनकी मातृभाषा में निरक्षर छोड़ देती है और प्रमुख में निम्न उपलब्धि स्तर को भी बढ़ावा देती है।

उत्तम कुमार पात्रा एट अल। (2021) ने पुरुलिया जिले के विशेष संदर्भों के साथ पश्चिम बंगाल में आदिवासी लोगों के शैक्षिक परिदृश्य का विश्लेषण करने का प्रयास किया। इस पत्र में शिक्षा में इस तरह के पिछड़ेपन के कारणों पर भी प्रकाश डाला गया है, और इस जिले में आदिवासी लोगों के शैक्षिक विकास के लिए कुछ सकारात्मक उपायों का सुझाव दिया गया है। शिक्षा किसी भी समाज की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है। भारत दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है। भारत की जनगणना (2011) के अनुसार आदिवासी आबादी इस देश की कुल आबादी का लगभग 8.6% हिस्सा है और उनकी साक्षरता दर लगभग 58.96% है। पश्चिम बंगाल भारत में लोकप्रिय आदिवासी केंद्रित राज्यों में से एक है, जिसमें लगभग 5.79% आदिवासी लोग हैं। कुल जनसंख्या (जनगणना 2011) पुरुलिया पश्चिम बंगाल के सबसे पिछड़े जिलों में से एक है, जहां बड़ी संख्या में आदिवासी लोग पहाड़ी और वन क्षेत्र में रहते हैं, लेकिन उनकी साक्षरता दर बहुत कम है क्योंकि इस जिले के अधिकांश आदिवासी बहुत गरीब हैं, सामाजिक रूप से वंचित हैं। बेरोजगार हैं, और अपनी बिखरी हुई बस्तियों के कारण उचित सामाजिक लाभ प्राप्त नहीं कर सकते हैं। भारत में एसटी साक्षरता बहुत खराब है, इसलिए यह हमारे समाज के विकास में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है। लेकिन हाल के दिनों में भारत सरकार आदिवासी विकास नीति जैसे कुछ आवश्यक कदम उठाती है, आदिवासी लोगों को छात्रवृत्ति का प्रबंधन करती है, शैक्षिक समितियां और आयोग बनाती है, आदिवासी आरक्षण नीतियां आदि लेती है। इसके लिए आदिवासी साक्षरता दर धीरे-धीरे कुछ वर्षों में बढ़ जाती है। तो, ये सुविधाएं और कदम भारत के साथ-साथ पुरुलिया जिले में आदिवासी समुदायों के बीच शिक्षा के विकास के लिए भविष्य में

सहायक होंगे।

सामाजिक गतिशीलता

समाजशास्त्रियों का मानना है कि भारतीय जाति व्यवस्था की बंद प्रकृति के बावजूद, जाति पदानुक्रम और उसके मानदंडों में बदलाव हुए हैं, जो समय-समय पर स्पष्ट हो गए हैं। वैदिक काल के दौरान, हिंदू धर्म में विभिन्न सांस्कृतिक प्रथाओं का पालन किया जाता था। उस समय, वैदिक हिंदू धर्म जादुई-आत्मिक था; वैदिक ब्राह्मण सोम पीते थे, पशु बलि चढ़ाते थे और गोमांस खाते थे। इन प्रथाओं को बाद में प्रतिबंधित कर दिया गया, लेकिन वे निचली जातियों के बीच जारी रहीं ।

जातिगत गतिशीलता, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया के रूप में, श्रीनिवास ने अपनी संस्कृतिकरण की अवधारणा में समझाया है। संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में निचली जाति के लोग अपने रीति-रिवाज, विचारधारा और जीवन-शैली को उच्च या द्विज जाति की ओर मोड़ते हैं। इससे जाति व्यवस्था के भीतर गतिशीलता का मार्ग प्रशस्त हुआ है। अनुसूचित जातियों के बीच सामाजिक गतिशीलता के दो पैटर्न हैं; (i) कल्याणकारी उपायों ने अनुसूचित जातियों के कुछ चुनिंदा वर्गों में गतिशीलता लाई है, जिससे शिक्षा और रोजगार के क्षेत्रों में प्रमुख जातियों के आधिपत्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है; और (ii) अनुसूचित जातियों के बीच सामाजिक गतिशीलता भी कुछ सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलनों का प्रत्यक्ष परिणाम है, जिसने बदले में, उच्च-जाति विरोधी दृष्टिकोण और अपनी स्वयं की निम्न स्थिति के बारे में जागरूकता पैदा की है। ऐसा नहीं है कि ये दोनों पैटर्न एक दूसरे से बिल्कुल स्वतंत्र हैं; वे आपस में काफी जुड़े हुए हैं . स्वतंत्रता से पहले अनुसूचित जाति समुदाय के खिलाफ भेदभाव बहुत प्रचलित था। यह सामाजिक संरचना में उनके सीमित आवागमन में दिखाई देता था। सामाजिक गतिशीलता के मामले में उन्हें लगातार उपहास का सामना करना पड़ा। अनुसूचित जाति समुदाय से संबंधित कुछ लोगों ने शिक्षा, व्यवसाय, समाज के विकसित क्षेत्रों में प्रवास के मामले में संवैधानिक सुरक्षा और कल्याण कार्यक्रमों से अधिकतम लाभ उठाया है।

सामाजिक पदानुक्रम में एक व्यक्ति या समूह का एक सामाजिक स्थिति से दूसरे सामाजिक स्थिति में जाना सामाजिक गतिशीलता कहलाता है। सामाजिक गतिशीलता केवल ऊपर की ओर जाने तक ही सीमित नहीं है, यह नीचे की ओर भी जा सकती है और एक जैसी भी रह सकती है।. ऊर्ध्वगामी गतिशीलता निम्न स्तर से उच्च स्तर की ओर उत्थान है, जिसमें जीवन स्तर, शिक्षा, व्यवसाय, आय, प्रवास, सांस्कृतिक तत्वों की स्वीकृति और पुनर्संयोजन का विशेष संदर्भ है, जबकि अधोगामी गतिशीलता सामाजिक पदानुक्रम में किसी व्यक्ति या समूह के उच्च स्तर से निम्न स्तर की ओर अवतरण का वर्णन करती है। क्षैतिज गतिशीलता प्रतिष्ठा, आय, स्वास्थ्य, व्यवसाय आदि के संबंध में एक समान स्तर पर एक व्यक्ति या समूह की आवाजाही है। इसमें आबादी के एक ही सामाजिक स्तर के भीतर आवाजाही बनी रहती है। ऊर्ध्वाधर गतिशीलता एक व्यक्ति या समूह का एक स्तर से दूसरे स्तर पर आरोही या अवरोही क्रम में आवागमन है। यह निम्न से उच्च सामाजिक स्थिति या इसके विपरीत संक्रमण के रूप में हो सकता है।

सामाजिक गतिशीलता एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति और सामूहिक समुदाय एक स्थिति से दूसरी स्थिति में जाते हैं। सामाजिक गतिशीलता पूरी तरह से समाज के खुलेपन और बंद होने की डिग्री पर निर्भर करती है। औद्योगिक समाज में, खुलेपन की डिग्री पूर्व-औद्योगिक समाज की तुलना में अधिक है। यहाँ, औद्योगिक समाज में, एक आयाम से दूसरे आयाम तक की गतिशीलता पूर्व-औद्योगिक समाज की तुलना में काफी अधिक है। पूर्व-औद्योगिक समाज में, स्थिति हमेशा निर्धारित की जाती थी, जबकि अब, यह उपलब्धियों, प्रतिभा, क्षमता और कड़ी मेहनत पर आधारित है। आधुनिक औद्योगिक समाज में नस्ल, जाति, रिश्तेदारी और लिंग बहुत कम महत्वपूर्ण हो गए हैं. यह सिर्फ़ औद्योगिक समाज के खुलेपन की वजह से है कि अनुसूचित जाति समुदाय ऊपर की ओर बढ़ा है। सामाजिक गतिशीलता का मूल विभिन्न मूल के व्यक्तियों द्वारा सामाजिक स्थिति या पदों में आंदोलन की सीमा है। इसलिए, सामाजिक गतिशीलता का विश्लेषण सामाजिक स्थिति के पदानुक्रम को मानता है जिसे समाज ने परतों की एक श्रृंखला में व्यवस्थित किया है, और कुछ मानदंड जिनका उपयोग किसी व्यक्ति या समूह की पदानुक्रम में स्थिति, स्तर या स्थिति को इंगित करने के लिए किया जा सकता है।

सोरोकिन (1959) ने कहा, "सामाजिक गतिशीलता से तात्पर्य किसी व्यक्ति, या सामाजिक वस्तु, या मूल्य - मानव गतिविधि द्वारा बनाई गई या संशोधित की गई किसी भी चीज़ - का एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन से है।" उन्होंने

समय को बदलाव का कारक माना। समय के इस कारक से, दो प्रकार की गतिशीलता का पता लगाया जा सकता है। यह पीढ़ीगत परिवर्तन को संदर्भित करता है जो दो प्रकार का होता है।

अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता से तात्पर्य सामाजिक गतिशीलता से है जिसमें एक पीढ़ी अपनी सामाजिक स्थिति को पिछली पीढ़ियों के विपरीत बदलती है। इसे बच्चे की व्यावसायिक स्थिति की तुलना उसके माता-पिता से करके मापा जाता है। मान लीजिए कि माता-पिता मोची हैं। शिक्षा प्राप्त करने के बाद बच्चा क्लर्क या डॉक्टर बन जाता है। मिलर (1968) ने अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता अंतर्वाह और बहिर्वाह का विश्लेषण करने के दो तरीकों का संकेत दिया है। अंतर्वाह प्रकार के विश्लेषण में, उत्तरदाता के पिता के व्यवसाय को जानने का प्रयास किया जाता है। दूसरी ओर, बहिर्वाह विश्लेषण किसी दिए गए व्यावसायिक पद पर पिता के बेटों के व्यवसायों के वितरण को प्रस्तुत करता है। अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता का तात्पर्य एक ही पीढ़ी के भीतर गतिशीलता से है। इसे किसी व्यक्ति की जीवन अवधि में उसकी स्थिति में आए बदलाव से मापा जाता है। परिवार में एक सदस्य की स्थिति में परिवर्तन लेकिन परिवार के दूसरे सदस्य की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं। मान लीजिए किसी व्यक्ति ने अपना करियर क्लर्क के रूप में शुरू किया, समय के साथ अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों और अन्य मूल्यवान कौशल के कारण वह एक आई.ए.एस. अधिकारी बन जाता है। उसके भाई ने भी अपना करियर क्लर्क के रूप में शुरू किया होगा, लेकिन हो सकता है कि वह अपने जीवनकाल में उच्च पद पर न पहुंचा हो, वह उसी स्थिति में बने रहे। यहाँ हम देख सकते हैं कि कैसे एक भाई अपनी स्थिति बदलता है और दूसरा नहीं। सामाजिक गतिशीलता एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ सामाजिक वैज्ञानिकों ने बहुत शोध किया है। जब भी कोई आंदोलन होता है - ऊपर या नीचे की ओर, पूरे समाज में परिवर्तन होते हैं। सामाजिक गतिशीलता की दर का वर्ग निर्माण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। गिडेंस (1973) ने सुझाव दिया कि यदि सामाजिक गतिशीलता की दर कम है तो वर्ग सामंजस्य और एकजुटता अधिक होगी। सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन समाज के सदस्यों के लिए जीवन के अवसरों का संकेत दे सकता है। यह अध्ययन करना महत्वपूर्ण है कि लोग गतिशीलता पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं; यदि ऊपर की ओर गतिशीलता है तो समुदाय के लोगों के बीच अधिक प्रतिस्पर्धा होगी।

पूर्ण गतिशीलता का अर्थ है कि जीवन स्तर पूर्ण रूप से बढ़ रहा है। आप अपने माता-पिता से बेहतर हैं, और आपका बच्चा आपसे बेहतर होगा। मान लीजिए कि कोई व्यक्ति 20,000 रुपये से कम आय के साथ अपना कामकाजी करियर शुरू करता है और कुछ वर्षों के बाद, उसकी आय 40,000 रुपये तक बढ़ने की संभावना है, जो दर्शाता है कि उस व्यक्ति ने ऊपर की ओर पूर्ण आय गतिशीलता का अनुभव किया है। सापेक्ष गतिशीलता से तात्पर्य उस सीमा से है जिस तक व्यक्ति अपने समूह में दूसरों की तुलना में ऊपर या नीचे जाता है। दूसरे शब्दों में, इसका यह भी अर्थ है कि यदि किसी का परिवार गरीब है, तो उसके पास सापेक्ष आय की सीढ़ी में ऊपर जाने का एक अच्छा मौका हो सकता है। सापेक्ष गतिशीलता समाज के खुलेपन या लचीलेपन से संबंधित है, और संरचनात्मक परिवर्तन के प्रभाव के प्रति असंवेदनशील है। मान लीजिए कि किसी व्यक्ति की आय उसके कार्य-जीवन की शुरुआत में 20,000 रुपये से बढ़कर एक दशक बाद 50,000 रुपये हो जाती है, लेकिन उसी समय के आसपास अपना काम शुरू करने वाले ज़्यादातर लोगों को ज़्यादा वृद्धि मिली। यहाँ व्यक्ति ने नीचे की ओर सापेक्ष गतिशीलता द्वारा ऊपर की ओर निरपेक्ष गतिशीलता का अनुभव किया।

अनुसूचित जाति की सामाजिक गतिशीलता

औपनिवेशिक काल के दौरान अनुसूचित जाति के लोगों के उत्थान के लिए अस्पृश्यता विरोधी आंदोलन चलाए गए थे। इन आंदोलनों के माध्यम से कई अछूत अपनी सामाजिक स्थिति को ऊपर उठाने में सफल हुए हैं, डॉ. अंबेडकर, महात्मा गांधी और कुछ अन्य समाज सुधारकों ने अनुसूचित जाति के लोगों के उत्थान के लिए कई तरह की पहल की। 1920 के दशक में महाराष्ट्र में डॉ. बी.आर. अंबेडकर द्वारा एक प्रमुख अछूत विरोधी आंदोलन शुरू किया गया था। उनका आंदोलन महाराष्ट्र के दलितों को मंदिर प्रवेश के लिए एकत्रित करने तक ही सीमित नहीं था; उन्होंने दलितों के लिए पृथक निर्वाचिका की मांग भी उठाई तथा 1936 में स्वतंत्र मजदूर पार्टी तथा 1942 में अनुसूचित जाति संघ का गठन किया।. पंजाब के संदर्भ में अंबेडकर के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता; उनके प्रयासों के कारण ही भारत सरकार अधिनियम, 1935 के तहत पंजाब राज्य विधानसभा में अनुसूचित जाति के लोगों के लिए 8 सीटें आरक्षित हुईं। अनुसूचित जातियां उनके प्रयासों के लिए बहुत आभारी हैं. भारत में अनुसूचित जातियों की सामाजिक गतिशीलता बड़े पैमाने पर स्वतंत्रता के बाद हुई, जिसका कारण शहरीकरण, आधुनिकीकरण,

संस्कृतीकरण, शिक्षा में वृद्धि, परिवहन और संचार के साधनों का विकास आदि था। वितरणात्मक न्याय, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और विकास के अवसरों के साथ विकास पर जोर देने वाले विकास के समाजवादी मॉडल ने सामाजिक गतिशीलता, विशेष रुप से अनुसूचित जाति की सामाजिक गतिशीलता के लिए रास्ते बनाए।

लिपसेट और ज़िटरबर्ग द्वारा सामाजिक गतिशीलता

लिपसेट और ज़िटरबर्ग ने "औद्योगिक समाज में सामाजिक गतिशीलता" में सामाजिक गतिशीलता के विचार पर विस्तार से चर्चा की। यह दृष्टिकोण किसी समूह या व्यक्ति की गतिशीलता निर्धारित करने के लिए कई कारकों पर निर्भर करता है जैसे व्यवसाय, शिक्षा, आय और सामाजिक शक्ति के साथ-साथ सामाजिक वर्ग "जो उन व्यक्तियों से बना है जो एक-दूसरे को समान मानते हैं और घनिष्ठ संबंधों के लिए योग्य हैं।" लिपसेट और ज़िटरबर्ग सामाजिक गतिशीलता को मापने के लिए दो पद्धतिगत दृष्टिकोण निर्धारित करने में सफल रहे। सबसे पहले किसी जाति समूह की वर्तमान स्थिति को उसकी पिछली स्थिति के साथ बराबर करने की आवश्यकता है, उस जाति समूह की अपने क्षेत्र या देश में गतिशीलता के साथ-साथ समान अवसर को व्यक्त करने वाले एक गतिशीलता मॉडल को दूसरे के साथ परिभाषित करना। अध्ययन में समाज में माँ और बेटी की स्थिति की तुलना करके गतिशीलता का पता लगाने की पारंपरिक विधि अपनाई गई है।

मेर्टन ने 1968 में संदर्भ समूह सिद्धांत दिया था, जिसके अनुसार कुछ लोग ऐसे व्यक्तियों और समूहों के व्यवहार पैटर्न और जीवन शैली को अपनाते हैं जो पदानुक्रमित सामाजिक स्थिति में उनसे बेहतर माने जाते हैं।. वे अपने सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन लाकर समान स्थिति प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं। इस प्रक्रिया में लगे व्यक्ति या समूह ने समाज में अपनी अधीनस्थ स्थिति को स्वीकार कर लिया है और पूर्वानुमानित समाजीकरण के माध्यम से संदर्भ(ओं) के संबंध में अपनी सामाजिक स्थिति को बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।. सामाजिक व्यवस्था में किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की वस्तुपरक अभिव्यक्ति ही उसकी स्थिति निर्धारित करने का एकमात्र मानदंड नहीं रह जाती। उसके द्वारा प्रस्तुत आत्म-छवि भी उसकी सामाजिक परिस्थितियों के लिए जिम्मेदार होती है। यह समस्याजनक हो जाता है क्योंकि अधिकांश लोग अपनी आत्म-छवि दूसरों से प्राप्त करते हैं जिसका अर्थ है कि वे अन्य व्यक्तियों या समूहों के व्यवहार, संस्कृति, भोजन और अनुष्ठानिक प्रथाओं को आत्मसात कर लेते हैं। मेर्टन ने मूल्यों और विश्वास की इस स्वीकृति और अपनाने को 'पूर्वानुमानित समाजीकरण' कहा। यह सीधे संदर्भ समूहों या व्यक्तियों के मूल्यों और जीवन शैली पर आधारित है।

यह दृष्टिकोण अनुसूचित जाति समुदाय के लोगों के बीच सामाजिक गतिशीलता के अध्ययन के लिए भी उपयुक्त है। यह प्रक्रिया अनुकरण के योग्य माने जाने वाले पहचान समूह या समूहों (संदर्भ समूह) के मूल्यांकन पर केंद्रित है। व्यक्तियों में आत्म-मूल्यांकन और संदर्भ समूहों या समूहों के अपने मानदंडों और मूल्यों को अपनाने और स्वीकार करने के लिए निर्धारक समूह द्वारा 'पूर्वानुमानित समाजीकरण' के लिए संदर्भ की एक तुलनात्मक रूपरेखा बनाई गई है।

मेर्टन के ढांचे में चार प्रकार के संदर्भ समूह शामिल थे - मानक समूह या समूह जो संदर्भ की रूपरेखा प्रदान करते थे; तुलनात्मक समूह या समूह जो तुलना प्रदान करते थे जिसके सापेक्ष किसी व्यक्ति के अभाव का मूल्यांकन किया जाता था; सकारात्मक समूह या समूह जिसमें आत्म-मूल्यांकन के आधार के रूप में समूह के मानदंडों या मानकों का प्रेरित आत्मसात शामिल होता था; और अंत में, नकारात्मक संदर्भ समूह - जिसमें प्रेरित अस्वीकृति और प्रति मानदंडों का निर्माण शामिल होता था। सामाजिक गतिशीलता का उनका सिद्धांत केवल ऐसे समाज में ही कारगर है जो एक खुली व्यवस्था का पालन करता है और प्रमुख समूह द्वारा संदर्भित समूह के प्रत्याशित समाजीकरण व्यवहार को स्वीकार करता है। समाज का खुलापन और निकटता सापेक्ष है। जाति-आधारित समाज में नव-गतिशीलता की स्वीकृति दुर्लभ है।

अध्ययन में, शोधकर्ता ने पाया कि अनुसूचित जाति के छात्र उच्च जाति के समुदायों के व्यवहार पैटर्न और जीवन शैली को अपनाकर अपनी स्थिति को ऊपर उठाने की कोशिश करते हैं। अनुसूचित जाति के लोग चाहते हैं कि उनके बच्चे अन्य जातियों के सदस्यों की तरह शिक्षित हों।अनुसूचित जाति समुदायों के शिक्षित बच्चे अक्सर अपनी सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए उच्च जाति समुदायों के तौर-तरीकों की नकल करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाने और सामाजिक स्वीकृति बढ़ाने के लिए शहरी समुदायों की जीवनशैली को अपनाते हैं। बिजली, पानी की सुविधाएँ और डिजिटल

गैजेट सभी के लिए अधिक सुलभ हो गए हैं, वे अब संगमरमर और सीमेंट के फर्श, आधुनिक रसोई उपकरणों, स्वच्छ शौचालय सुविधाओं वाले पक्के घरों में रहते हैं, जो पारंपरिक समाजों में संभव नहीं था। उनके पास अधिकांशतः सभी आवश्यक घरेलू संपत्तियां होती हैं, जैसे मोटरसाइकिल, मोबाइल फोन, टेलीविजन, कंप्यूटर, वाशिंग मशीन, एलपीजी, कार आदि। कभी-कभी उपकरणों का चुनाव प्राथमिकता का विषय बन जाता है, उदाहरण के लिए, हैंड ब्लेंडर के बजाय वे मधानी का उपयोग करते हैं।

जाति का विरोधाभास इस तथ्य में निहित है कि यद्यपि निम्न जाति के लोग उच्च जाति (जाति) में शामिल होने की उम्मीद नहीं कर सकते हैं और इसलिए भी कि उच्च जाति के लोगों को उनके बहिष्कार का डर नहीं होना चाहिए। यद्यपि संदर्भ और अनुकरण के लिए सकारात्मक अभिविन्यास की अनुमति है और यहां तक कि प्रोत्साहित भी किया जाता है। प्रत्याशित समाजीकरण तब भी हो सकता है जब यह अंतिम अवशोषण या समावेशन सुनिश्चित न करे यह संबंधित लोगों के लिए कार्यात्मक हो सकता है। जाति की उच्च श्रेणी को आम तौर पर संदर्भ मॉडल के रूप में माना जाता था, लेकिन डॉ बीआर अंबेडकर, ज्योतिबा फुले और कुमारी मायावती, सुश्री मीरा कुमार जैसे कई प्रसिद्ध विद्वान और प्रभावशाली लोग निम्न जाति वर्ग से संबंधित थे, जिन्होंने दूसरों के लिए वांछित संदर्भ समूह मॉडल के मानदंडों को पूरा किया।

सामाजिक गतिशीलता के अध्ययन में समस्याएँ

एंथनी गिडेंस ने गतिशीलता के अध्ययन में आने वाली कुछ बुनियादी समस्याओं का संकेत दिया, जो इस प्रकार हैं:

- नौकरियों की प्रकृति समय के साथ बदलती रहती है, और यह हमेशा स्पष्ट नहीं होता कि जिसे हम 'समान' व्यवसाय मानते हैं, वह अभी भी वैसा ही है या नहीं। उदाहरण के लिए, यह स्पष्ट नहीं है कि ब्लू-कॉलर से व्हाइट-कॉलर कर्मचारी तक की गतिशीलता को हमेशा 'ऊपर की ओर' के रूप में सही ढंग से परिभाषित किया जाता है या नहीं। कुशल ब्लू-कॉलर कर्मचारी अधिक नियमित व्हाइट-कॉलर नौकरियों में कई लोगों की तुलना में बेहतर आर्थिक स्थिति में हो सकते हैं
- अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता के अध्ययन में, यह तय करना कठिन है कि संबंधित करियर के किस बिंदु पर ऐसी तुलना की जानी चाहिए. उदाहरण के लिए, जब बच्चा अपना व्यावसायिक जीवन शुरू करता है, तब माता-पिता अभी भी अपने कैरियर के मध्य में हो सकते हैं; माता-पिता और उनकी संतान एक साथ गतिशील हो सकते हैं, शायद एक ही दिशा में या (कम से कम) भिन्न दिशा में। अब समस्या यह उत्पन्न होती है कि उनकी तुलना उनके करियर की शुरुआत में की जाए या अंत में।

शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता

शिक्षा किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, चाहे वह लड़का हो या लड़की। इसका सीधा संबंध व्यक्ति की सामाजिक गतिशीलता से है। यह एक शक्तिशाली साधन है जो व्यक्ति के जीवन स्तर को ऊपर उठाने में मदद करता है और उसे सामान्य रूप से उसके समग्र व्यक्तित्व को विकसित करने में मदद करता है, जिससे ऊर्ध्वाधर गतिशीलता बढ़ती है। लेकिन भारत जैसे कुछ विकासशील देशों में, पिछड़े, दबे और अनुसूचित जनजाति के लोंगो को अक्सर शिक्षा के अवसर से वंचित रखा जाता है। इसका मुख्य कारण उच्च वर्गीय व्यवस्था, परंपराएँ और संस्कृति है जो शिक्षा प्रक्रिया में उनकी शक्ति और बुद्धिमत्ता में बाधा डालती हैं। उनके अनुसार, स्कूल उनके लिए अपनी प्रभावी भूमिकाएँ निभाने के लिए सीखने की सबसे अच्छी जगह नहीं है। ऐसे समाजों में अनुसूचित जनजाति के लोगों को उच्चवर्गीय से कमतर माना जाता है और उनकी शैक्षिक गतिशीलता बहुत कम होती है।

भारतीय समाज में अनुसूचित जनजाति की स्थिति हमेशा उच्च जाति से कमतर रही है और उनके जीवन के कई क्षेत्रों में उनके साथ भेदभाव किया जाता है और शिक्षा उनमें से एक है। 19वीं सदी के कई सामाजिक और राजनीतिक सुधारक उच्च जाति और निम्न जाति के बीच असमानताओं के खिलाफ़ आगे आए और निम्न जाति और दलितों को आगे आकर समाज की आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। अंग्रेजों ने भारत में औपचारिक शिक्षा की शुरुआत इस उद्देश्य से की थी कि कुछ शिक्षित भारतीयों को नियुक्त किया जाए जो ईस्ट इंडिया कंपनी के विकास के लिए प्रशासनिक कार्यों में उनकी सहायता कर सकें। शुरुआत में, ब्रिटिश सरकार ने शिक्षा प्रणाली पर कोई ध्यान नहीं दिया क्योंकि उनका मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना और व्यापार करना था।

भारत में शासन करने के लिए, उन्होंने जानबूझकर समाज में वर्ग बनाने के लिए उच्च और मध्यम जातियों के छोटे वर्गों को शिक्षा दी। अंग्रेजी भाषा उन संस्थानों में पढ़ाई जाती थी जहाँ औपचारिक शिक्षा का लाभ ज़्यादातर उच्च जाति के लोग उठाते थे और ऐसी शिक्षा निम्न जाति के लोगों को नहीं दी जाती थी। एडगर थर्स्टन पहले व्यक्ति थे जिन्होंने दक्षिण भारत के विभिन्न जाति समूहों और उपजातियों की पहचान करने का काम किया। उसके बाद हटन और जनगणना आयुक्त ने 1930 में जातियों को व्यवस्थित और तर्कसंगत तरीके से अगड़ी और पिछड़ी के रुप में वर्गीकृत किया। पिछड़ेपन को निर्धारित करने के मानदंडों में से एक शिक्षा थी।

डॉ. बी.आर. अंबेडकर, जिन्होंने भारत के संविधान की रचना की, ने शिक्षा के कारण विभिन्न जातियों के बीच व्यापक अंतर को देखा, इन शैक्षिक रुप से पिछड़ी जातियों को शिक्षा में विशेष प्रावधान प्रदान करके उनकी मदद की ताकि वे बाकी समाज के साथ तालमेल बिठा सकें। राजा राम मोहन राय और ईश्वर चंद्र विद्यासागर, ज्योतिराव फुले, महर्षि कर्वे और सावित्रीबाई फुले जैसे समाज सुधारकों ने निम्न वर्गीय शिक्षा के पक्ष में आवाज उठाई। ईसाई मिशनरियों और कुछ विद्वान लोगों ने इस दिशा में प्रयास किए। ब्रिटिश काल के दौरान, विभिन्न कार्यक्रमों और नीतियों के कारण अनुसूचित जाति के लोगों की स्थिति में धीरे-धीरे सुधार हुआ। उन्होंने दलित शिक्षा पर ध्यान दिया। वे जानते थे कि दलितों के विकास के बिना देश का विकास संभव नहीं है। इसलिए, उन्होंने पुरुषों के संबंध में शिक्षा के मामले में समान अवसर प्रदान किए। औद्योगिक क्रांति ने शिक्षा और रोजगार में दलितों के योगदान के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। औद्योगिक क्रांति के कारण नौकरियों में दलितों की भागीदारी बढ़ी। FAWE (फोरम फॉर अफ्रीकन वूमेन एजुकेशनलिस्ट), 2004 शिक्षा के लाभों का वर्णन करता है कि शिक्षा हमें जीवन स्तर प्रदान करती है; यह बाजार और गैर-बाजार श्रमिकों की उत्पादकता बढ़ाती है।

व्यवसाय और सामाजिक गतिशीलता

व्यवसाय आय का एक तरीका है और इसे लोगों की जीवनशैली का सूचकांक या प्रतीक माना जाता है और इससे व्यक्ति की प्रतिष्ठा भी जुड़ी होती है। समाज में किसी व्यक्ति का व्यवसाय जितना ऊंचा होगा, समाज में उसे उतनी ही ऊंची स्थिति और प्रतिष्ठा मिलेगी। शिक्षा के अलावा, व्यवसाय एक और शक्तिशाली साधन है जो व्यक्तियों को उनके जीवन स्तर को बढ़ाने और उनके समग्र व्यक्तित्व को विकसित करने में मदद करता है, खासकर निम्न जाति के मामले में, जिससे सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा मिलता है। जाति व्यवस्था में, जातियाँ पारंपरिक रुप से व्यवसाय से जुड़ी हुई हैं, जो लगभग वंशानुगत थी। यदि कोई व्यक्ति किसी विशेष जाति में पैदा हुआ था, तो उसे अपने पूर्वजों के पारंपरिक व्यवसाय का पालन करना था, जो जन्म से ही निर्धारित था और कोई भी व्यक्ति अपनी मेहनत या योग्यता के आधार पर अपना व्यवसाय नहीं बदल सकता था। इस प्रकार, जाति व्यवस्था में व्यवसाय के चुनाव के संबंध में प्रतिबंध रहे हैं। धोबी का बेटा धोबी ही रहता है, कुम्हार का बेटा कुम्हार ही रहता है, मोची का बेटा अपने पिता के व्यवसाय मोची के रुप में ही करता है, जो निश्चित था और पिता से बेटे को वंशानुगत रुप से मिलता था। अनुसूचित जाति के लोगों का व्यवसाय मैला ढोना, झाड़ू लगाना, चमड़े का काम, शवों को हटाना आदि जैसे गंदे, असम्मानजनक और अपमानजनक कामों से जुड़ा था, जिन्हें उच्च जाति के लोग अशुद्ध मानते थे। हालाँकि, ब्रिटिश शासन और समाज सुधारकों के प्रयासों के तहत, शिक्षा और कानूनों में महत्वपूर्ण बदलाव किए गए, जिससे जाति व्यवस्था में महत्वपूर्ण बदलाव आया। शिक्षा के दरवाजे सभी के लिए खोल दिए गए और धीरे-धीरे इसने पारंपरिक व्यवसायों को जाति से अलग कर दिया। विभिन्न जातियों के लोग अपनी पसंद के व्यवसाय में शामिल होने में सक्षम थे और इससे व्यावसायिक गतिशीलता आई। यह परिवर्तन सामाजिक और व्यावसायिक गतिशीलता के सबसे महत्वपूर्ण संकेतकों में से एक के रुप में कार्य करता है।

समाज में आए बदलावों के साथ ही निम्न और अनुसूचित जनजाति के लोग भी नौकरियों में शामिल होना शुरु कर दिया और आजादी के बाद से उनके व्यवसाय के संदर्भ में भी बदलाव देखने को मिला है। आधुनिक समय में कामकाजी जनजाति की अवधारणा दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आजादी से पहले, निम्न जाति को व्यवसाय, शिक्षा और सामाजिक-सांस्कृतिक भागीदारी के मामले में विकास के अवसर से वंचित रखा गया था। अपने पूरे जीवन के दौरान वह भेदभाव, असमानता, स्वतंत्रता की कमी और हिंसा का शिकार रहे। अनुसूचित जाति के लोगों को उनकी आर्थिक स्थिति के कारण कई कम वेतन वाली आर्थिक गतिविधियों के लिए बाध्य किया जाता था। उन्हें सफाई और मैला ढोने जैसे गंदे और अजीब काम करने के लिए मजबूर किया जाता था। जाति पदानुक्रम में, अनुसूचित जाति को कई बेहतर, स्वच्छ और वेतन वाले व्यवसायों में प्रवेश से वंचित रखा गया था; उनका व्यवसाय मैला ढोने और झाड़ू लगाने तक सीमित था, जिन्हें निम्न और गंदा माना जाता था।

आजादी के बाद निम्न जाति के प्रति पारंपरिक रवैये में बदलाव आया है। निम्न जाति के लोग विभिन्न व्यवसायों में भारी वृद्धि दिखा रहे हैं। उन्होंने एक नई सामाजिक स्थिति हासिल कर ली है। पीसी देब (1975) ने अपने अध्ययन में पाया कि घर के मुखिया का व्यवसाय परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवसाय में बदलाव और स्थिति की गतिशीलता के लिए जिम्मेदार एक महत्वपूर्ण कारक है। सतीश सबरवाल (1990) ने अपनी पुस्तक 'मोबाइल मेन: लिमिट्स टू सोशल चेंज इन अर्बन पंजाब' में मॉडलपुर में तीन निचली जातियों के बीच सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक गतिशीलता के पैटर्न पर चर्चा की। शिक्षा व्यावसायिक गतिशीलता में भी मदद करती है। विभिन्न प्रकार के व्यवसायों के लिए अलग-अलग ज्ञान, कौशल और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। जैसा कि डेविस और मूर (1967) ने अपने लेख "स्तरीकरण के कुछ सिद्धांत" में कहा कि समाज में कुछ ऐसे पद हैं जो कार्यात्मक रूप से दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं और विभिन्न पदों के साथ अलग-अलग पुरस्कार जुड़े हुए हैं। कार्यात्मक रूप से, अधिक महत्वपूर्ण पदों के लिए कौशल और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

समाज के समुचित कामकाज के लिए भूमिका आवंटन होना चाहिए और लोगों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी प्रतिभा, कौशल और प्रशिक्षण के अनुसार पद दिए जाएं। इस प्रकार, किसी विशेष पद और व्यवसाय को प्राप्त करने के पीछे एक निश्चित तर्क है। आधुनिक समय में, अधिकांश व्यवसायों के लिए कुछ कौशल की आवश्यकता होती है जो शिक्षा के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं। शिक्षा व्यावसायिक गतिशीलता का साधन भी है। किसी व्यक्ति की शिक्षा जितनी अधिक होगी, वह व्यावसायिक सीढ़ी पर उतना ही ऊपर होगा। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि शिक्षा और व्यवसाय दोनों सामाजिक गतिशीलता के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह अनुसूचित जाति को पदानुक्रम में अपनी सामाजिक स्थिति बढ़ाने में भी मदद करता है।

निष्कर्ष

शिक्षा और मनुष्य के बीच का रिश्ता बहुत करीबी है। मनुष्य ने लगभग हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त की है और अपने जीवन को आरामदायक बनाया है, लेकिन यह विकास या उपलब्धि उसके ज्ञान और कौशल की कीमत पर प्राप्त की गई है, जिसे शिक्षा के माध्यम से प्राप्त किया गया है, क्योंकि इसे मुक्ति मानव सशक्तिकरण के लिए सबसे शक्तिशाली साधन माना जाता है। दरअसल, शिक्षा जीवन की बेहतरी और गुणवत्ता के लिए मानव ज्ञान और सशक्तिकरण की एक प्रक्रिया है। यह न केवल मनुष्य के ज्ञान, कौशल, दक्षताओं, क्षमता, मूल्यों और दृष्टिकोण को बढ़ाता है बल्कि उसके विश्वास और विचारों को भी बदल देता है। साथ ही, इसे सत्य की खोज और पुण्य के अभ्यास में मानव आत्मा के प्रशिक्षण के रूप में माना जाता है)।

वैश्विक परिवर्तन और विकास की प्रक्रिया में, भारत ने विभिन्न क्षेत्रों जैसे कृषि, व्यापार और वाणिज्य, परिवहन, संचार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, उत्पादन आदि में सफलता हासिल की है। इन अभूतपूर्व परिवर्तनों के परिणाम के साथ, भारत में हर आने-जाने में शिक्षा का विस्तार हो रहा है, क्योंकि इसे मानव संसाधन माना जाता है देश में विकास (H.R.D) हालांकि आजादी के बाद देश अपने लोगों को शिक्षित करने के लिए और अधिक जागरूक हो गया है। इसलिए इसने उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करने और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ समग्र विकास को प्राप्त करने के लिए विभिन्न शैक्षिक योजनाओं और कार्यक्रमों की शुरुआत की है।

हिंदू समाज के ऐतिहासिक सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक ढांचे के कारण, लोग विभिन्न वर्गों और स्तरों में उभरे हैं। इसके अलावा, ये वर्ग उसी कारण से वंचित समूहों के रूप में उभरे हैं। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, कमजोर वर्ग जैसे महिलाएं और अल्पसंख्यक वंचित (ए.आर.देसाई) हैं। हालाँकि, यह शैक्षिक विस्तार या परिवर्तन सभी और समाज के सभी वर्गों के लिए नहीं हुआ है। इस प्रकार, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य वंचित लोग अभी भी शिक्षा के सभी चरणों में पिछड़ रहे हैं।

इस संबंध में, शिक्षा और अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति, शिक्षा और अल्पसंख्यकों जैसी मौजूदा स्थिति के संबंध में इन वंचित समूहों के गतिशील पहलुओं के संबंध में अध्ययन किए गए हैं और किए जा रहे हैं। शिक्षा और महिला सशक्तिकरण और इतने पर अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य कमजोर वर्गों की शिक्षा का प्रसार करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों दोनों के निरंतर प्रयासों के बावजूद, सामान्य जातियों और अन्य समुदायों की तुलना में अनुसूचित जनजातियों में शिक्षा का स्तर बहुत कम है।

अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक विकास को आजादी से पहले की अवधि में प्रोत्साहित किया गया है, फिर भी इसका संतोषजनक परिणाम नहीं मिला है। साहित्य और उपलब्ध कई रिपोर्टों से पता चलता है कि सभी संवैधानिक प्रावधानों और क्रमिक पंचवर्षीय योजनाओं में किए गए प्रयासों के बावजूद, उनका शिक्षा स्तर बहुत कम है ऐसा लगता है कि अनुसूचित जनजातियों के लोगों को अभी भी शिक्षा के क्षेत्र में सामान्य स्तर तक आने के लिए एक लंबा रास्ता तय करना है, यहां तक कि पेशेवर रुप से शिक्षित समुदायों की संख्या भी इन बातों को ध्यान में रखते हुए, भारतीय समाज के महत्वपूर्ण वंचित समूहों में से एक, अनुसूचित जनजातियों के जीवन में परिवर्तन लाने में शिक्षा की भूमिका को समझने का प्रयास किया गया है।

संदर्भ

1. सुजीत कुमार चौधरी (2016) "एजुकेशनल स्टेटस ऑफ़ ट्राइबल इन झारखण्ड: ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ उरांव एंड संथाल", मध्य प्रदेश जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, वॉल्यूम। 21, अंक 1, पीपी. 120+, http://www.mpissr.org/Journal.aspx
2. पुरुषोत्तम, ढींगरा वी. (2016) अंडरस्टैंडिंग द इंडियन ट्राइबल लाइफ एंड डियर इशू, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च (2017) 5(7) 1588-1595, डीओआई: 10.21474/ijar01/4873
3. संजय कू और घडाई (2016) "इंक्लूसिव एंड क्वालिटी एजुकेशन फॉर ट्राइबल: केस स्टडी किस (ओडिशा)", जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, (ऑनलाइन) वॉल्यूम 7, नंबर 28, 2016, www.iiste.org ISSN 2222- 1735 (पेपर) आईएसएसएन 2222-288X।
4. विशाल डी. पजानकर (2016) "ए केस स्टडी ऑन एक्सेसिबिलिटी ऑफ़ स्कूल इन ट्राइबल एरियाज एंड इट्स एम्प्लिकेशन ऑन एजुकेशनल इन्क्लूसिवेनेस्स", वॉल्यूम 7, नंबर 19, 2016, आईएसएसएन 2222-1735 (पेपर) आईएसएसएन 2222-288X (ऑनलाइन)
5. परीक्षित चक्रवर्ती (2019) "एजुकेशनल स्टेटस ऑफ द ट्राइबल वेस्ट बंगाल: स्पेशल रेफरेंस टू द वेस्ट मेदिनीपुर डिस्ट्रिक्ट", ग्लोबल जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी एंड एंथ्रोपोलॉजी। वॉल्यूम 9, नंबर 1 (2019), पीपी. 1-14, http://www.ripublication.com
6. रुपला नाइक एंड के दशरथरमैया, (2019)। "एजुकेशन एंड सोशियो इकोनॉमिक डेवलपमेंट ऑफ ट्राइबल वीमेन: ए स्टडी," शानलैक्स इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स, शानलैक्स जर्नल्स, वॉल्यूम। 7(4), पेज 9-19, सितंबर।
7. रीमिंगम मार्चांग (2020) "एडुकेशन, एम्प्लॉयमेंट एंड इकॉनमी ऑफ़ नार्थ ईस्ट इंडिया: ए स्टडी ऑफ़ मणिपुर", वॉल्यूम 39, इशू 1, जनवरी-मार्च 2020 डीओआई: 10.25175/jrd/2020/v39/i1/152503।
8. जीसु केतन पटनायक (2020) "ट्राइबल चिल्ड्रेन इन ओडिशा एंड दियर राइट टू एजुकेशन इन द होम लैंग्वेज", वॉल्यूम 40, इशू 2, 2020, https://doi.org/10.1177/0262728020915569 ।
9. उत्तम कुमार पात्रा एट अल। (2021) "ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ ट्राइबल एजुकेशन डेवलपमेंट इन इंडिया: विथ स्पेशल रेफरेन्सेस टू पुरुलिया डिस्ट्रिक्ट, वेस्ट बंगाल", आईएसएसएन- 2394-5125, वॉल्यूम 8, नंबर 01, 2021।
10. सोरोकिन, पी. (1959). सोसिअल एंड कल्चरल मोबिलिटी न्यूयॉर्क: द फ्री प्रेस.
11. टी.एम. स्टिनुएट, "प्रोफ़ेशनल प्रोब्लेम्स ऑफ़ टीचर्स", द मोर मिलियन कंपनी, न्यूयॉर्क - 1968।
12. मेर्टन, आर.के. (1968). सोसिअल थेयोरी एंड सोसिअल स्टक्चर एक्सपैंडेड एड न्यूयॉर्क, एनवाई: द फ्री प्रेस.
13. पीसी देब (1975) सोसिअल स्ट्रैटिफिकेशन एंड मोबिलिटी इन ए रउरा सेटिंग रीसर्च इंस्टीटुड पुब्लिकेशन्स , 1975 यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिशिगन 1 सितंबर 2006 120 पेजेज ।

14. सबरवाल (1990) कॉन्स्ट्रैन्ट्स इन ट्राइबल कल्चर फॉर फॉर्मल एजुकेशन", इंटेल इंडिया पब्लिकेशन , नई दिल्ली - 1990.

15. डेविस, के., एंड मूर, डब्ल्यू. ई. (1967) सम थेओरीज ऑफ़ स्ट्रैटिफिकेशन इन बैंडिक्स एंड लिस्पेर (एडिटर्स) क्लास स्टेटस एंड पावर (पी पी 242-249) लंदन: रूटलेज एंड केगन पॉल।

http://web.stanford.edu/group/scspi/_media/pdf/Reference%20Media/Kingsley_Moore_Theory.pdf